MP Board Class 11th Hindi Swati Solutions पद्य Chapter 4 नीति

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
बिना उपयुक्त अवसर के कही गई बात कैसी लगती है? (2015)
उत्तर:
बात करते समय अवसर के अनुरूप बात करनी चाहिए जैसे विवाह के समय दी हुई गालियाँ भी मन को प्रसन्न करती हैं। इसी प्रकार युद्ध के प्रसंग में श्रृंगार रस की बात अच्छी नहीं लगती है। अतः प्रसंगानुकूल ही बात करनी चाहिए।

प्रश्न 2.
ऐसी कौन-सी सम्पत्ति है जो व्यय करने पर बड़ती है? (2009)
उत्तर:
सरस्वती का कोश (विद्या धन) ऐसी सम्पत्ति है जो व्यय करने पर सदैव बढ़ती है।

प्रश्न 3.
सुख और दुःख को किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए?
उत्तर:
सुख और दुःख को बड़ी शान्ति से ग्रहण करना चाहिए जिस प्रकार कि उदय होता हुआ चन्द्रमा और अस्त होता हुआ चन्द्रमा एक-सा होता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
किस उदाहरण के द्वारा कवि ने यह बताया है कि कोई बुरी चीज यदि भले स्थान पर स्थित हो, तो भली लगती है?
उत्तर:
कवि ने काजल के माध्यम से बताया है कि यद्यपि काजल में मलिनता होती है। परन्तु उचित स्थान पर प्रयोग करने से उसका महत्त्व बढ़ जाता है।

प्रश्न 2.
वृक्ष के माध्यम से कवि क्या संदेश देता है? (2015, 17)
उत्तर:
वृक्ष के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है कि सज्जन व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देते हैं।

प्रश्न 3.
रहीम ने 'विपदा' को भला क्यों कहा है ? (2011, 14)
उत्तर:

रहीम ने 'विपदा' को इसलिए भला कहा है क्योंकि विपत्ति आने पर ही संसार में अच्छे और बुरे व्यक्ति की पहचान हो पाती है। सुख में तो सभी साथ देते हैं परन्तु विपत्ति पड़ने पर जो साथ दे वही सच्चा मित्र या व्यक्ति होता है।

प्रश्न 4.
अच्छे लोग सम्पत्ति का संचय किसलिए करते हैं?(2016)
उत्तर:
अच्छे लोग सम्पत्ति का संचय दूसरों के लिए करते हैं। जिस प्रकार वृक्ष अपने फल नहीं खाते हैं, तालाब अपना जल स्वयं नहीं पीते हैं, उसी प्रकार सज्जन भी सम्पत्ति का संचय परहित (दूसरों के हित) के लिए ही करते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
वृन्द के संकलित दोहों के आधार पर उनके 'नीति' सम्बन्धी विचार दीजिए। (2012)
उत्तर:
महाकवि वृन्द ने जीवन के सम्बन्ध में गहन अनुभव किये हैं। उसी के अनुसार उन्होंने अपने दोहे में कहा है कि अवसर के अनुरूप ही सोच-समक्ष कर बात करनी चाहिए। किस अवसर पर किस प्रकार की बात करें यह अधोलिखित दोहे से स्पष्ट होता है-
फीकी पैनीकी लगै, कहिये समय विचारि।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि ।।
नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात ।।

अन्य दोहे में कवि ने कपट युक्त व्यवहार के विषय में कहा है कि-
जैसे हांडी काठ की चढ़े न दूजी बार।

कपट करने से व्यक्ति का विश्वास नष्ट हो जाता है, फिर चाहे वह कितना भी अच्छा व्यवहार करे, कोई भी उसकी बात का विश्वास नहीं करेगा।
कवि वृन्द ने कहा है कि मूर्ख व्यक्ति को धैर्यवान होना चाहिए। समयानुसार कार्य पूर्ण होता है जिस प्रकार-
कारज धीरै होतु है, काहै होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै. केतक सींचो नीर।।

इसी प्रकार कवि ने कहा है कि मूर्ख व्यक्ति को सम्पत्ति देना व्यर्थ है क्योंकि मूर्ख व्यक्ति सम्पत्ति के महत्त्व को नहीं जानता है। उदाहरण देखें-
कहा कहाँ विधि को अविधि, भूले परे प्रबीन।
मूरख को सम्पत्ति दई, पंडित सम्पत्ति हीन।।

कवि ने सरस्वती के कोश को अपूर्व बताया है और कहा है कि एकमात्र यही धन ऐसा है जो खर्च करने से बढ़ता है और संचय करने से घटता है। उदाहरण देखें-
सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़े, बिन खरचै घट जात।।

https://www.evidyarthi.in/

कवि ने एक अन्य दोहे में यह नीति की बात समझायी है। व्यक्ति के नेत्रों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह आपका हितैषी है या नहीं है जिस प्रकार दर्पण में व्यक्ति की अच्छाई-बुराई स्पष्ट दिखाई देती है, उसी प्रकार नेत्र भी अच्छे-बुरे का भाव प्रकार करते हैं। उदाहरण में देखें-
"नयना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत।।"

इस प्रकार कवि वृन्द ने व्यक्ति, समाज, परिवार अच्छे-बुरे व्यवहार सम्बन्धी बातें नीति सम्बन्धी दोहों में कही हैं। ओछे व्यक्ति के सम्बन्ध में वृन्द कवि के विचार देखें-
"ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात" इस प्रकार कवि ने विभिन्न नीतिपरक दोहों द्वारा मानव को शिक्षा दी हैं।

प्रश्न 2.
वृन्द की किन शिक्षाओं को आप जीवन में अपनाना चाहेंगे?
उत्तर:
महाकवि वृन्द के दोहे जीवन-शिक्षा के लिए अपूर्व भंडार हैं। उनके द्वारा लिखा गया प्रत्येक दोहा मानव जीवन के किसी न किसी लक्ष्य को परिलक्षित करता है। कभी-कभी कवियों के द्वारा कही गयी शिक्षाप्रद बातें मानव को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देती हैं।

नीतिपरक दोहों के माध्यम से मानव को समयानुरूप बात करने की प्रेरणा मिलती है। वाणी का उचित अवसर का प्रयोग करके व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है।

कार्य करते समय धैर्य धारण करके ही कार्य करना चाहिए। क्योंकि कार्य करते समय जल्दबाजी उचित नहीं होती है। मूर्ख या अज्ञानी व्यक्ति को कभी भी उसके हित की बात नहीं समझानी चाहिए। क्योंकि वह व्यक्ति अर्थ का अनर्थ कर देता है।
उदाहरण देखें-
हितहू की कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध।।

इसी प्रकार कवि ने सरस्वती के कोश के विषय में बताया है कि यह सरस्वती का खजाना अनूठा है जो कि व्यय करने पर बढ़ता है। इस अपूर्व धन को मानव को निरन्तर व्यय करते रहना चाहिए।

इसके अतिरिक्त कवि ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन की बात नहीं बतानी चाहिए क्योंकि ओछे व्यक्ति के मन में कभी भी बात पचती नहीं है। उदाहरण देखें-
"ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समात।।

इस प्रकार के सुन्दर दोहों के द्वारा कवि वृन्द ने मानव को उन्नति के पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

प्रश्न 3.
'जो रहीम ओछौ बढ़े तो अति ही इतराय' इस पंक्ति के द्वारा रहीम क्या कहना चाहते हैं?
उत्तर:
इस पंक्ति के द्वारा रहीम कवि ने निम्न श्रेणी के व्यक्ति के विषय में बताया है कि व्यक्ति यदि छोटे पद से अचानक ही बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है तो वह इठलाता है। ऐसी प्रवृत्ति केवल उन व्यक्तियों में होती है जिनके पास कुछ भी न हो और अचानक बहुत-सा धन सम्पत्ति या सम्मानित पद मिल जाये तो वे घमण्ड का अनुभव करते हैं।

अपने गर्व से चूर होकर वे किसी से बात करना भी पसन्द नहीं करते। ऐसी प्रवृत्ति ओछे व्यक्तियों में ही होती है। अपने इस दोहे के माध्यम से कवि ने ओछे व्यक्ति की मानसिकता को इस प्रकार व्यक्त किया है-
“प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय।”

कवि ने मानव को इस पंक्ति के माध्यम से बताया है कि व्यक्ति को उच्च पद पर प्रतिष्ठित होने पर इतराना नहीं चाहिए। इससे व्यक्ति का ओछापन प्रतीत होता है।

व्यक्ति को सम्पत्ति अथवा सत्ता प्राप्त हो जाने पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। यदि मानव घमण्ड करता है तो यह प्रवृत्ति अच्छी नहीं कही जायेगी।

https://www.evidyarthi.in/